Document Title	The Battle of Navsari (738 AD): The Decisive Defeat of the Umayyad Caliphate in India / नवसारी का महायुद्ध (738 AD)
Author / Creator	Dr. Govind Malviya (REAL HI STORY)
Document Type	Historical Research Monograph / ऐतिहासिक शोध-पत्र
Date of Publication	August 15, 2026
Primary Language	Hindi (हिंदी) & English
Subject Keywords	Battle of Navsari, Battle of Rajasthan, Umayyad Caliphate, Nagabhata I, Bappa Rawal, Avanijanashraya Pulakeshin, Navsari Copper Plate Inscription, Indian Military History, Gurjara-Pratihara, Guhila, Chalukya
Target Archive	Internet Archive Open Knowledge Commons

नवसारी का महायुद्ध (738 AD)

जब 'उमय्यद खलाफत' (Umayyad Caliphate) का भारत की सीमा पर वजूद मिटा दिया गया

लेखक एवं शोधकर्ता: डॉ. गोविंद मालवीय ('REAL HI STORY')

प्रकाशन तिथि: 15 अगस्त 2026

1. कार्यकारी सारांश (Executive Summary)

7वीं और 8वीं शताब्दी में मध्य पूर्व, उत्तरी अफ्रीका, स्पेन और पारस (ईरान) पर विजय प्राप्त करने के बाद, अरबी उमय्यद खलाफत ने भारत की समृद्ध मुख्य भूमि (Mainland India) पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करने के उद्देश्य से एक विशाल सैन्य अभियान चलाया। 730 से 738 ईस्वी के दौरान भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमी सीमावर्ती राज्यों पर हुए इन आक्रमणों का उत्तर भारत के तीन प्रमुख राजवंशों के एक महान गठबंधन (Tripartite Confederacy) ने वीरतापूर्वक सामना किया। 738 ईस्वी में नवसारी (वर्तमान गुजरात) के निकट लड़े गए इस महायुद्ध में अरबी सेना का मुकम्मल विनाश हुआ। इस शोध-पत्र में प्राथमिक अभिलेखीय प्रमाणों और समकालीन अरबी स्रोतों के माध्यम से इस युद्ध की सैन्य रणनीतियों और ऐतिहासिक परिणामों का विश्लेषण किया गया है।

© 15th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY).

2. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं बफर राज्यों का पतन

712 ईस्वी में मुहम्मद बिन कासिम द्वारा सिंध पर विजय प्राप्त करने के उपरांत, अरबी गवर्नरों–विशेष रूप से जुनैद इब्न अब्दुल रहमान अल-मुरी और अल-हकम इब्न अव्वाना अल-कलबी–ने भारत के भीतरी हिस्सों पर हमले शुरू किए।

नवसारी ताम्रपत्र के अनुसार, प्रारंभिक अरबी आक्रमणों ने पश्चिमी भारत के कई राज्यों को अस्थिर कर दिया:

- **सैंधव (Saindhava):** पश्चिमी सौराष्ट्र (गुजरात) का तटीय राज्य।
- **कच्छेल्ल (Kachchella):** कच्छ का क्षेत्रीय राज्य।
- **चावोटकट (Chavotkata):** भिनमाल एवं पंचासर का चावड़ा राजवंश।
- **मौर्य (Maurya):** चित्तौड़ एवं कोटा क्षेत्र के स्थानीय मौर्य शासक (जैसे मान मोरी)।
- **गुर्जर (Gurjara):** नांदीपुरी (भरूच) के गुर्जर प्रतिहार सामंत।

© 15th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY).

इन राज्यों के पतन ने सीमा पर एक राजनीतिक और सैन्य शून्य (Power Vacuum) उत्पन्न कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप भारत के महान योद्धाओं का उदय हुआ।

3. भारतीय त्रि-गुट गठबंधन (The Tripartite Alliance)

सभ्यतागत संकट को भांपते हुए, भारत के तीन प्रमुख राजवंशों ने आपसी मतभेदों को परे रखकर एक विशाल संयुक्त मोर्चा बनाया:

1. **नागभट्ट प्रथम (Nagabhata I):** अवंती/जालोर के गुर्जर-प्रतिहार वंश के संस्थापक, जिन्होंने मालवा और उत्तर-पश्चिम मोर्चे का नेतृत्व किया।
2. **बप्पा रावल (Bappa Rawal):** मेवाड़ के गुहिल राजवंश के महान शासक, जिन्होंने राजपूताना मोर्चे पर अरबों को खदेड़ा।
3. **अवनिजानाश्रय पुलकेशी (Avanijanashraya Pulakeshin):** दक्षिण गुजरात (लता क्षेत्र) के चालुक्य राजवंश (वातापी/बादामी के विक्रमादित्य द्वितीय के अधीन) के शासक, जिन्होंने दक्षिणी सीमा को अभेद्य बनाया।

© 15th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY).

4. नवसारी का युद्धक्षेत्र और रणनीतिक विजय

738 ईस्वी में, जब अल-हकम के नेतृत्व में अरबी सेना दक्षिण भारत (दक्कन) की ओर बढ़ने के प्रयास में नवसारी क्षेत्र में प्रविष्ट हुई, तो भारतीय गठबंधन ने रणनीतिक घेराबंदी (Pincer Movement) की योजना बनाई।

नागभट्ट प्रथम और बप्पा रावल की सेनाओं ने उत्तर और पूर्व से दबाव बनाया, जबकि अवनिजानाश्रय पुलकेशी की चालुक्य सेना ने नवसारी के निकट अरबी सेना के अग्रिम और पश्च भागों को घेर लिया। यह भयंकर पैदल और घुड़सवार युद्ध अरबी सेना के पूर्ण विनाश के साथ समाप्त हुआ।

5. प्राथमिक ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक प्रमाण

A. नवसारी ताम्रपत्र शिलालेख (Navsari Copper Plate Inscription, 739 AD)

कलचुरी संवत 490 (739 AD) में जारी यह दानपत्र इस युद्ध का सबसे पुख्ता प्रमाण है। इसमें स्पष्ट उल्लेख है कि अवनिजानाश्रय पुलकेशी ने उस 'ताजिक' (अरब) सेना को पूरी तरह नष्ट कर दिया जिसने कच्छ, सौराष्ट्र, चावोटकट और मौर्यों का विनाश किया था।

इस अभूतपूर्व विजय के उपरांत पुलकेशी को चार महान उपाधियां दी गईं:

- **दक्षिणापथसाधार** (दक्षिण मार्ग का मुख्य स्तंभ)
- **अणिवर्तकनिवर्तयितृ** (अजेय शत्रुओं को पीछे खदेड़ने वाला)
- **अवनिजानाश्रय** (समस्त पृथ्वी का आश्रय)
- **पृथ्वीवल्लभ** (पृथ्वी का प्रिय)

© 15th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY).

B. अरबी इतिहासकार अल-बलाधुरी का विवरण (*Futuh al-Buldan*)

9वीं शताब्दी के अरबी इतिहासकार अहमद इब्न याह्या अल-बलाधुरी ने अपनी प्रसिद्ध कृति *'फुतुह अल-बुल्दान'* में लिखा:

"मुसलमानों के लिए भारत में शरण लेने या सुरक्षित छिपने तक के लिए कोई स्थान नहीं बचा था।"

इसी ऐतिहासिक पराजय के भय से अरबों ने अपनी जान बचाने के लिए सिंध में सिंधु नदी के तट पर एक नया सुरक्षित शहर बसाया, जिसका नाम **'अल-महफूज़ाह' (Al-Mahfuzah - The Protected City)** रखा गया।

C. मिहिर भोज की ग्वालियर प्रशस्ति

गुर्जर-प्रतिहार सम्राट मिहिर भोज के ग्वालियर शिलालेख में नागभट्ट प्रथम की प्रशंसा करते हुए उल्लेख किया गया है कि उन्होंने *"म्लेच्छ राजाओं की विशाल सेना का संहार किया।"*

6. दीर्घकालिक भू-राजनीतिक प्रभाव

1. **300 वर्षों की सुरक्षा:** इस पराजय की विभीषिका इतनी भयानक थी कि 11वीं सदी में महमूद गज़नवी के आगमन तक (लगभग 350 वर्षों तक) किसी भी इस्लामिक आक्रांता की हिम्मत भारत की मुख्य भूमि (Mainland India) में प्रवेश करने की नहीं हुई।
2. **नए राजवंशों का उदय:** मौर्यों के क्षीण होने के बाद बप्पा रावल ने 734 ईस्वी के आसपास चित्तौड़ पर पूर्ण अधिकार कर मेवाड़ के गौरवशाली गुहिल वंश को सुदृढ़ किया, जबकि नागभट्ट प्रथम ने गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य को भारत का अग्रिम रक्षा-कवच बनाया।

© 15th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY).

The Battle of Navsari (738 AD)

The Strategic Decimation of the Umayyad Caliphate at the Indian Frontier

Author & Researcher: Dr. Govind Malviya ('REAL HI STORY')

Publication Date: August 15, 2026

1. Executive Summary

Following the swift expansion of the Umayyad Caliphate across North Africa, Spain (Andalusia), Persia, and Central Asia in the 7th and 8th centuries, Caliphate forces launched an ambitious campaign to annex the Indian mainland. Between 730 AD and 738 AD, Arab expeditions targeted the western frontier kingdoms of the Indian subcontinent. In response, a formidable coalition forged by three eminent Indian dynasties confronted the invaders. The resulting Battle of Navsari (738 AD) in modern-day Gujarat led to the catastrophic defeat of the Arab army. This research monograph evaluates primary epigraphic records and contemporary historiography to document this military encounter.

© 15th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY).

2. Geopolitical Context & Collapse of Buffer States

Following Muhammad bin Qasim's annexation of Sindh in 712 AD, successive Arab governors—notably Al-Junayd ibn Abd al-Rahman al-Murri and Al-Hakam ibn Awana al-Kalbi—pushed eastward into the Indian heartland.

As recorded in the Navsari Copper Plate Inscription, initial Arab incursions devastated key western kingdoms:

- **Saindhava:** Coastal principality in western Saurashtra.
- **Kachchella:** Regional state in Kutch.
- **Chavotkata:** The Chavda dynasty of Bhinmal and Panchasar.
- **Maurya:** Local Mauryan rulers of Chittor and Kota (e.g., Man Mori).
- **Gurjara:** Local feudatories of Nandipuri (Bharuch).

The destruction of these border entities established a power vacuum that facilitated the consolidation of power under new Indian military leaders.

3. The Tripartite Indian Confederacy

Recognizing the civilizational threat, three prominent Indian houses established a unified military front:

1. **Nagabhata I:** Founder of the Imperial Gurjara-Pratihara dynasty of Avanti/Jalor, who secured the northern and western flanks.
2. **Bappa Rawal:** Ruler of the Guhila dynasty of Mewar, who organized resistance across Rajasthan.
3. **Avanijanashraya Pulakeshin:** Chalukya prince of the Lata region (vassal to Emperor Vikramaditya II of Badami), who fortified the southern approach in Gujarat.

© 15th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY).

4. Tactical Execution of the Battle of Navsari

In 738 AD, as the Arab army under Al-Hakam advanced southward toward the Deccan, the Indian alliance executed a coordinated pincer movement near Navsari.

While the northern and eastern forces under Nagabhata I and Bappa Rawal disrupted the enemy's supply lines and vanguard, the Chalukyan heavy infantry and cavalry under Pulakeshin engaged the main body of the Arab force. Trapped between regional geography and the tactical encirclement, the Caliphate army suffered near-total annihilation.

5. Primary Epigraphic and Historiographical Sources

A. Navsari Copper Plate Inscription (739 AD)

Issued in Kalachuri Era 490 (739 AD), this epigraph serves as the primary epigraphic record of the victory. It explicitly records that Avanijanashraya Pulakeshin crushed a massive *Tajika* (Arab) military force that had previously overrun Kutch, Saurashtra, Chavotkata, and the Mauryas.

In recognition of this defense, the Chalukyan court awarded him four paramount titles:

- **Daksina-patha-sadhar** (Pillar of the Southern Route)
- **Anivartaka-nivartayitr** (Repeller of the Unrepellable)
- **Avanijanashraya** (Refuge of the Earth)
- **Prithvi-vallabha** (Beloved of the Earth)

© 15th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY).

B. Chronicle of Al-Baladhuri (*Futuh al-Buldan*)

The 9th-century Arab historian Ahmad ibn Yahya al-Baladhuri acknowledged the devastation in his historical work *Futuh al-Buldan*:

"A place of refuge for the Muslims could not be found in India."

To safeguard their remaining presence in Sindh, the Arab administration established a fortified garrison city on the banks of the Indus River named **Al-Mahfuzah** (literally "The Protected City").

C. Gwalior Prashasti of Mihira Bhoja

The Gwalior inscription of the Gurjara-Pratihara king Mihira Bhoja commemorates Nagabhata I as the sovereign who *"destroyed the massive army of the Mleccha king."*

6. Geopolitical Legacy

1. **Three-Century Frontier Stability:** The military outcome at Navsari halted Umayyad eastward expansion, securing Mainland India from major foreign invasions for over 300 years until the campaigns of Mahmud of Ghazni in the 11th century.
2. **Dynastic Reconfiguration:** Following the decline of the local Mauryas, Bappa Rawal consolidated control over Chittor (c. 734 AD), establishing the stronghold of Mewar. Concurrently, Nagabhata I expanded the Gurjara-Pratihara domain into India's primary western shield.

© 15th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY).